‘शाह तुराब चिश्ती एवं समर्थ रामदास की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन”

(मनसमझावन तथा मनाचे श्लोक के विशेष संदर्भ में)

(स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड की पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध - प्रबंध की रुप- रेखा.)

:शोधार्थी:

प्रा. तनवीर अ. रशीद जहागीरदार

एम.ए.एम फिल्

:शोध - निर्देशक:

डॉ. अल्लाबक्ष एच. जमादार

असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग

भाई किशनराव देशमुख महाविद्यालय,

चाकूर जि. लातूर

सन.2015

<u>**अनुक्रम**</u>

1. **प्रथम अध्याय :**

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2. **द्वितीय अध्याय :**

दखनी अैर मराठी का सह संबंध तथा सूफी संतो की विचारधारा

3. **तृतीय अध्याय :**

शाह तुराब तथा समर्थ रामदास के जीवन दर्शन और सिद्धांत (समानता-असमानता)

4. **चतुर्थ अध्याय :**

मनसमझावन तथा मनाचे श्लोक वर्ण्य विषय के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन

5. **पंचम अध्याय :**

मनसमझावन तथा मनाचे श्लोक का भाषिक विश्लेषण

6. **षष्ठ्य अध्याय :**

मनसमझावन तथा मनाचे श्लोक की पाठसंहिता

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

भूमिका

हिंदी के सर्वांगपूर्ण अध्ययन के लिए उसकी उपभाषाओं और मुख्य-मुख्य बोलियों का अध्ययन आवश्यक है । हिंदी का जो परिनिष्ठित और परिष्कृत रुप इस समय साहित्य में प्रयुक्त हो रहा है वह एक नगर या दो-चार जिलो में विकसित नहीं हुआ उसके विकास में सदियों से समस्त देश का योग रहा है । विद्वानो दार्शनिकों से लेकर सामान्य किसान तक सभी ने इस भ्ांषा को समृद्‍ध किया है । हिंदी की पूर्वी, पाश्मिी, दक्खिनी आदि बोलियाँ है जिनका अध्ययन किए बिना पूर्ण रुप से हिंदी को समझ नही पाते । दखनी हिंदी जो आज से चार सौ वर्ष पूर्व राष्ट्र भाषा बनने के पथ पर थी । दिल्ली, मेरठ, देहरादून आदि में बोली जानेवाली खडीबोली ही दखनी हिंदी है ।

दखनी हिंदी की साहित्य परंपरा तेहरवीं सदी से मिती है । संत नामदेव, संत एकनाथ्ं, खाजा बंदेनवाज, नुस्रती, गव्वासी, वजही, हसन शौकी, शाह तुराब आदि कवियों ने प्रचुर मात्रा के दखनी में साहित्य लेखन किया है । दखनी का अधिकतर साहित्य फारसी लिपि मे लिखा गया है । जिसके कारण हिंदी भाषी उसे पढ़ नही पाता । मैं फारसी लिपि से परिचित हुँ । जो पुराना साहित्य हस्तालिखित रुप में ग्रंथालयों में पडा हुआ है । उसे प्रकाश में लाने तथा हिंदी भाषियोंसे परिचित कराने के उद्देश्य से दखनी हिंदी में शोध कार्य करने की इच्छा हुई ।

दखनी हिंदी में शाह तुराब की ‘मनसमझावन’ रचना पढ़कर मैं काफी प्रभावित हुआ । तंजौर में ‘मनसमझावन’ का लेखन शाह तुराब ने अपने पूर्वज समर्थ रामदास के शिष्यों से ‘मनाचे श्लोक’ सुने और वहीं उन्होने जीवन के उस आलोक को मराठी से दखनी हिंदी में अवतरित कर लेने का सफल संकल्प किया । मनसमझावन के रुप में ‘मनाचे श्लोक’ का यह दखनी हिंदी रुपांतर समर्थ की रचना का अविकल रुपांतर न होकर उसकी छाया मात्र है जिसमें शाह तुराब की आत्मा ही स्वतंत्र छाया भी लक्षित होती है । सोलह वर्ष की आयु से स्त्रष्टा की योग्यता प्राप्त कर लेनेवाले शाह के लिए छियासठ वर्ष के परिणत उम्र में यह बात असंभव भी न थी ।

शाह तुराब ने मानव की आत्मा के परिष्कार के लिए लिखा । जो बात समर्थ रामदास ने मराठी में ‘मनाचे श्लोक’ के माध्यम से कही उसी को उन्होने दखनी में लिखा वे कहते हैं -

ए उसकी मन की पोती का जवाब है

कि जिसका रामदास जग में खिताब है ।

मरठ्ठी बात में पोती वो बोल्या

मैं उसका रम्ज सब दखनी में खोल्या ॥

भी उसका नाम मनसमझावन है राखा

वलेकिन सरबसर हिंदी है भाका ॥

हिंदी में उनका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर हिंदी भाषियों से शाह तुराब एवं समर्थ रामदास का परिचय कराने के उद्देश्य से इस विषय पर शोध कार्य करने की इच्छा हुई ।

<u>रुप रेखा</u>

विषय : शाह तुराब चिश्ती एवं समर्थ रामदास की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन

(मनसमझवन तथा मनाचे श्लोक के विशेष संदर्भ में)

भूमिका :

प्रथम अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शाह तुराब

1. जन्म
2. परिवार
3. माता-पिता
4. भाई - बहन
5. पुत्र - पुत्री
6. गुरु परंपरा
7. समकालीन कवि

रचनाएँ :

शाह तुराब ने अपने जीवन काल में प्रचुर मात्रा में साहित्य लेखन किया हैं जिनकी संख्या सात हैं।

1. जहूरे कुल्ली
2. गंजुल असरार
3. गुलजारे वहदत
4. ज्ञान स्वरुप
5. आईन-ए-कसरत
6. मसनवी महजबीन-ओ-मुल्ला
7. मनसमझावन

समर्थ रामदास

व्यक्तित्व

1. जन्म
2. माता-पिता
3. शिक्षा-दीक्षा
4. प्रेरणा स्त्रोत
5. छत्रपति शिवाजी के गुरु
6. परिवार
7. मंदिर स्थापना
8. व्यायाम शालाओं की स्थापना
9. मृत्यु

कृतित्व :-

1. दासबोध
2. आत्माराम
3. मनाचे श्लोक

दितीय अध्याय :-

दखनी और मराठी का सह-संबंध तथा सूफी संतो की विचारा धारा

2. दखनी उद्‌भव के संबंध विभिनन विद्‌वानों के विचार

2.1 दखनी: नामकरण

2.2 चंद्रधर शर्मा गुलेरी

2.3 हजारीप्रसाद द्विवेदी, धर्मवीर भारती, डॉ, रामकुमार वर्मा

2.4 श्रीराम शर्मा

2.5 देवी सिंह चौहान

2.6 बाबुराम सक्सेना

2.7 श्रीधर रंगनाथ कुलकर्णीजी के दखनी उद्‌भव के संबंध में विचार

2.8 दखनी भाषा मराठी संस्कृति का आविष्कार

2.9 सूफी विचारधारा

2.10 सूफी संतो की परंपरा

2.11 सूफी संतो का जीवन-दर्शन

तृतीय : अध्याय

शाह तुराब तथा समर्थ रामदास के जीवन दर्शन और सिद्‌धांत

3.1 शाह तुराब : धर्म संबंधी विचार

3.1.1 प्रार्थना में ‘खुदा ’ की जगह ‘राम ’ का नाम

3.1.2 धार्मिक एकता का प्रसार

3.1.3 हिंदू-मत के दर्पण में इस्लाम के विश्वास का प्रतिबिंब

3.1.4 हिंदू-मुस्लिम धार्मिक विश्वासो का विशाल दृष्टिकोण से प्रतिपादन

3.1.5 दुनिया की क्षणभगुंरता की आभिव्यक्ति

3.2 समर्थ रामदास का जीवन दर्शन

3.2.1 मंगलाचरण

3.2.2 हरिभक्ति और सदाचार

3.2.3 सुगुण भक्ति

3.2.4 मन की सज्जनता

3.2.5 निष्काम भक्ति

3.2.6 राम में विश्वास

3.2.7 नामस्मरण

3.2.8 बिना क्रिया के वाचालता व्यर्थ है

3.2.9 संसार की नश्वरता का वर्णन

3.2.10 सतसंगति

3.2.11 सद्गुरु का महत्त्व

3.2.12 नैतिक सुधार का उपदेश

चतुर्थ अध्याय :-

मनाचे श्लोक वर्ण्य - विषय के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन

4. प्रस्तावना

4.1 सासारिक जीवन की अस्थिरता
4.2 बाह्यडंबर
4.3 नश्वरता
4.4 दार्शनिकता
4.5 नैतिकता
4.6 सामाजिकता
4.7 मनोवैज्ञानिकाता
4.9 हिंदू-मुस्लिम एकता
4.10 निष्कर्ष

पंचम: अध्याय

'मनसमझावन' तथा 'मनाचे श्लोक' का भाषिक विश्लेषण

5.1 शब्द
5.2 विचलन
5.3 काव्य रुपों के स्तर पर
5.4 ध्वनि के स्तर पर

षष्ठ्य अध्याय

'मनसमझावन' तथा 'मनाचे श्लोक' की पाठसंहिता

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची